Shri Vishnupanjara from Vamanapurana

श्रीविष्णुपञ्जरस्तोत्रं वामनपुराणे

Document Information

Text title : viShNupanjara from vAmanapurANa

File name : viShNupanjaravAmanapurANa.itx

Category : vishhnu, panjara

Location : doc_vishhnu

Proofread by : NA

Source : Vamana Purana adhyAya 17 shloka 25-38

Latest update : April 14, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 8, 2021

sanskritdocuments.org

Shri Vishnupanjara from Vamanapurana

श्रीविष्णुपञ्जरस्तोत्रं वामनपुराणे

पुलस्त्य उवाच –
एतानि ते मयोक्तानि व्रतान्युक्तानि कामिभिः ।
प्रवक्ष्याम्यधुना त्वेतद्वैष्णवं पञ्जरं शुभम् ॥ १॥

नमो नमस्ते गोविन्द चक्रं गृह्य सुदर्शनम् । देवेश
प्राच्यां रक्षस्व मां विष्णो त्वामहं शरणं गतः ॥ २॥

गदां कौमोदकीं गृह्य पद्मनाभामितद्युते ।
याम्यां रक्षस्व मां विष्णो त्वामहं शरणं गतः ॥ ३॥

हलमादाय सौनन्दं नमस्ते पुरषोत्तम । पद्ममादाय सगदं
प्रतीच्यां रक्ष मे विष्णो भवन्तं शरणं गतः ॥ ४॥

मुसलं शातनं गृह्य पुण्डरीकाक्ष रक्ष माम् ।
उत्तरस्यां जगन्नाथ भवन्तं शरणं गतः ॥ ५॥

शार्ङ्गमादाय च धनुरस्त्रं नारायणं हरे ।
नमस्ते रक्ष रक्षोघ्न ऐशान्यां शरणं गतः ॥ ६॥

पाञ्चजन्यं महाशङ्खमन्त्रबोध्यं च पङ्कजम् । अनुबोध्य च
प्रगृह्य रक्ष मां विष्णो आग्नेय्यां यज्ञसूकर ॥ ७॥

चर्मसूर्यशतं गृह्य खड्गं चन्द्रमसं तथा ।
नैर्ऋत्यां मां च रक्षस्व दिव्यमूर्ते नृकेसरिन् ॥ ८॥

वैजयन्तीं प्रगृह्य त्वं श्रीवत्सं कण्ठभूषणम् ।
वायव्यां रक्ष मां देव अश्वशीर्ष नमोऽस्तु ते ॥ ९॥

वैनतेयं समारुह्य अन्तरिक्षे जनार्दन ।
मां त्वं रक्षाजित सदा नमस्ते त्वपराजित ॥ १०॥

विशालाक्षं समारुह्य रक्ष मां त्वं रसातले ।

अकूपार नमस्तुभ्यं महामोह नमोऽस्तु ते ॥ ११॥ महामीन

करशीर्षाङ्घ्रिसर्वेषु तथाऽष्टबाहुपञ्जरम् ।
कृत्वा रक्षस्व मां देव नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ १२॥

एतदुक्तं भगवता वैष्णवं पञ्जरं महत् ।
पुरा रक्षार्थमीशेन कात्यायन्यै द्विजोत्तम ॥ १३॥

नाशयामास सा यत्र दानवं महिषासुरम् ।
नमरं रक्तबीजं च तथाऽन्यान् सुरकण्टकान् ॥ १४॥

इति वामनपुराणे सप्तदशोऽध्यायान्तर्गतम्
विष्नूपञ्जरस्तोत्रं सम्पुर्णम् ॥

Vamanapurana 17.25-17.38

हिंदी अनुवाद –

पुलस्त्यजी बोले –
नारद ! यहाँतक मैंने तुमसे सकाम व्रतोंका वर्णन किया है । अब मैं कल्याणकारी विष्णुपञ्जर स्तोत्रको कहूँगा । (वह इस प्रकार है -) गोविन्द ! आपको नमस्कर है । आप सुदर्शनचक्र लेकर मेरी पूर्व दिशामें रक्षा करें । विष्णो ! मैं आपकी शरणमें शरणमें हूँ । अमितद्युते पद्मनाभ ! आप कौमोदकी गदा धारणकर मेरी दक्षिण दिशामें रक्षा करें । विष्णो ! मैं आपके शरण हूँ । पुरुषोत्तम ! आपको नमस्कार है । आप सौनन्द नामक हल लेकर मेरी पश्चिम दिशामें रक्षा करें । विष्णों ! मैं आपकी शरणमें हूँ ॥ २५ - २८॥ १-४

पुण्डरीकाक्ष ! आप ' शातन ' नामके विनाशकरी मुसलको लेकर मेरी उत्तर दिशामें रक्षा करें । जगन्नाथ ! मैं आपकी शरणमें हूँ । हरे ! शार्ङ्गधनुष एवं नारायणास्त्र लेकर मेरी ईशानकोणमें रक्षा करें । रक्षोघ्न ! आपको नमस्कार है, मैं आपके शरण हूँ । यज्ञावाराह विष्णो ! आप पाञ्चजन्य नामक विशाल शङ्ख तथा अन्तर्बोध्य पङ्कजको लेकर मेरी अग्निकोणमें रक्षा करें । दिव्यमूर्ति नृसिंह ! सूर्यशत नामकी ढाल तथा चन्द हास नामकी

तलवार लेकर मेरी नैर्ऋत्यकोणमें रक्षा करें ॥ २९ - ३२॥ ५-८

आप वैजयन्ती नामकी माला तथा श्रीवत्स नामका कण्ठाभूषण धारणकर मेरी वायव्यकोणमें रक्षा करें । देव हयग्रीव ! आपको नमस्कार है । जनार्दन ! वैनतेय (गरुड) - पर आरुढ होकर आप मेरी अन्तरिक्षमें रक्षा करें । अजित ! अपराजित ! आपको सदा नमस्कार है । महाकच्छप ! आप विशालाक्षपर चढ़कर मेरी रसातलमें रक्षा करें । महामोह ! आपको नमस्कर है । पुरुषोत्तम ! आप आठ हाथोंसे पञ्जर बनाकर हाथ, सिर एवं सन्धिस्थलों (जोडो) आदिमें मेरी रक्षा करें । देव ! आपको नमस्कार है ॥ ३३ - ३६॥ ९-१२

द्विजोत्तम ! प्राचीन कालमें भगवान् शंकरने कात्यायनी (दुर्गा) - की रक्षाके लिये इस महान् विष्णुपञ्जरस्तोत्रको उस स्थानपर कहा था, जहाँ उन्होंने महिषासुर, नमर, रक्तबीज एवं अन्यान्य देव - शत्रुओंका नाश किया था ॥ ३७ - ३८॥ १३-१४

Pulastya said
I have thus described these fasts to be observed by Kami (desirous) people. I will now describe this Vaishnava Panjara all benevolent for human-beings. 25 . 1

O Govind! I salute you. O Vishnu! Please defend me at east with Sudarshan discus in your hands. I am sheltered under you. 26 . 2

O unique in splendour! O Padmanabha! defend me at south with KaumodakI mace in your hand. O Vishnu! I am sheltered under you. 27. 3

O the best Purusha! I salute you. Defend me at west with Saunanda plough in your hand. O Vishnu! I have come in your sole shelter. 28 . 4

O Pundarikaksa! Defend me at north with

your destructive musala. O ruler of this universe! I have come to your shelter. 29 . 5

O Hari! Defend me at Ishana angle. O great defender! I salute you. I have come under your shelter. 30 . 6

O yajnasukara Vishnu! Ensure my defence at Agnikona with the great conch-shell Panchajanya and conscience giver lotus. 31 . 7

O divine feature Nrisimha! Ensure my defence at Nairitya angle with Suryasata shield and Candramasa sword. 32 . 8

O Asvashirsha god! Ensure my defence at Vayavya angle with VaijayantI garland and Srivatsa ornament around your throat. I salute you. 33 . 9

O victorious Janardana! Ensure my defence at the space of riding on Vainateya (garuda). O undefeated! I salute you always. 34 . 10

O Akupara (great tortoise) ensure my defence at Rasatala by riding on huge-eyed Garuda. O Mahamoha! Salute to you. 35 . 11

O Purushottama! Defend me by Ashtapanjara in hands, head and joints etc. O god! Salute to you. 36 . 12

O great Brahmin! Lord Shankara (Isa) had chanted this Vaishnava Panjara for the defence of Katyayani where she had killed Mahishasura, Namara, Raktabija and many other enemies of gods. 37-38 . 13-14

Vamanapurana adhyAya 17 verses 25-38

NA

Shri Vishnupanjara from Vamanapurana

pdf was typeset on June 8, 2021

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*